नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

व्यवस्था में यह सुराख क्यों ?

किसी भी देश के गणतंत्र का 77 वां गणतंत्र दिवस इस बात के लिए अत्यंत अहम रहता है कि लोकतांत्रिक और गणतांत्रिक मूल्यों को किस तरह आत्मसात किया जा रहा है. देश में गण की आवाज में जनता के सुर किस तरह मिल रहे हैं और तंत्र इन संयुक्त सुरों पर जनहित में कैसे काम कर रहा है - यह बहुत ही पारदर्शिता के साथ देनंदिनी घटनाक्रमों में देखा जा सकता है. भारत की गणतांत्रिक व्यवस्था पिछले 77 सालों से वैसे तो सुचारू स्वरूप में चल रही है, लेकिन कई बार इस व्यवस्था में कभी-कभी सुराख भी नजर आते हैं - जो यह दर्शाते हैं कि एक परिपक्व लोकतंत्र होने के बावजूद उसके आधारों की कार्यप्रणाली में सामंजस्य व अन्य अभाव नजर आते हैं.

हमारा मध्य प्रदेश इस बार कुछ बिंदुओं पर राष्ट्रीय सुर्खियों में शामिल रहा है. देश के सबसे स्वच्छ शहर इंदौर ने एक बड़ी आपदा झेली. यहां दूषित पेयजल की वजह से 28 लोग काल के गाल में समा गए. स्थानीय प्रशासन के तंत्र की ऐसी खामी नजर आई, जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है. तंत्र की इस असफलता पर चहुंओर समीक्षा भी हो रही है. इसी समीक्षा के दौरान हमारी व्यवस्था में सुराख बताने वाला एक वाक्या उस समय सामने आया, जब इंदौर जैसे महानगर के लोकतांत्रिक प्रणाली से भारी बहुमत से चुने हुए महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने हाथ खड़े कर यह कह दिया कि मेरी कोई सुनता नहीं है ! यह एक गण का तंत्र पर सीधा आक्षेप रहा. गण की इस साफगोई की गणतंत्र दिवस की बेला में खूब चर्चा हुई. यह हमारी व्यवस्था का कृष्णपक्ष रहा. जब लोकतांत्रिक कार्यप्रणाली में चुना हुआ मेयर तंत्र के सामने इतना असहाय है, तो फिर निरीह आम जनता की क्या बिसात ? फिर हम स्वराज, जनता का, जनता के लिए और जनता द्वारा - आदि शब्दों और वाक्यों का उपयोग क्या वास्तव में अंतर्मन से कर सकते हैं ? आखिर इन निर्दोष लोगों की स्वच्छ पेयजल उपलब्ध नहीं कराने के कारण जानें गईं, तब संविधान की उस मंशा का क्या, जिसमें जीवन जीने के अधिकार को बुनियादी अधिकार बताया जाता है ?

इंदौर का यह हादसा - कोई घटना नहीं है, अपितु यह हमारी व्यवस्था और तंत्र की कार्यप्रणाली पर एक बड़ा सवाल खड़ा करती है. केवल इंदौर का महापौर ही नहीं, देश में आए दिन ऐसे किस्से सुनने को मिलते हैं, जब नगर पंचायत, ग्राम पंचायत, नगर पालिका, नगर निगम, जिला पंचायत, जनपद पंचायतों के चुने हुए प्रतिनिधियों की व्यापक लोकहित की बातों को तंत्र नजरअंदाज करता है. ग्राम पंचायत में सचिव सरपंच की नहीं सुनते हैं ! तब क्या यह कहा जाएगा कि गणतंत्र के 77 वर्षों बाद भी हमारे देश में तंत्र - अभी भी गण पर हावी है ! तब आम जनता की स्थानीय शासन में हिस्सेदारी का क्या?

भारत में अभी भी तंत्र का अपना एक जाल है. ऐसा कहा जाता है कि शक्तिशाली तो इसे तोड़ देते है. लेकिन निरीह प्राणी इस जाल में फंस कर रह जाते हैं. देश के अलग-अलग क्षेत्रों में यदि माफिया हावी हैं, तो निश्चित ही इसके लिए किसी हद तक चुने हुए जनप्रतिनिधि भी जिम्मेदार हैं और तंत्र भी. आए दिन खबरें आती हैं - समिति सेवक, सिपाही, वनपाल, क्लर्क, दैनिक वेतनभोगी, पटवारी, नगर निगम का सबसे छोटा कर्मचारी, इनके जैसे और भी कर्मी - छापों के बाद करोड़ोंपति बनकर सामने आ रहे हैं. तब फिर बड़े अधिकारियों के बारे में क्या ही कहना ! सरकारी सेवाओं का भ्रष्टाचार - आम आदमी को रुला रहा है और हमारे मूल्य कोने में हाथ बांधे खड़े रहते हैं! 1947 हो या 1950, हमने इस तरह के समग्र तंत्र और व्यवस्था का सपना तो नहीं देखा था ! हमारी व्यवस्था में इस जैसे अनेक सुराख हैं, जो हमें निरंतर कचोटते रहते हैं !

समाज, चुने हुए जनप्रतिनिधियों, समाज व व्यवस्था के नायकों, मतनिर्माताओं सब को मिलकर इन सुराखों का इलाज करना होगा. आज फिर गणतंत्र दिवस पर हम सबको यह संकल्प लेना चाहिए. हम सबको एक साथ मिलकर इस दिशा में आगे बढ़ना होगा. आप सभी को गणतंत्र दिवस की बहुत-बहुत शुभकामनाएं...!!!

प्रधानमंत्री मोदी ने अपने पंचत्रण के आह्वान में भारतवासियों से सभी प्रकार की गुलामी से मुक्ति का आह्वान किया है

गणतंत्र दिवस- हमारा कर्तव्य

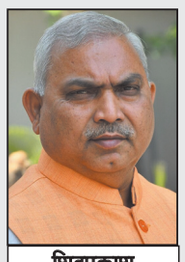

शिवप्रकाश
राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री

26 जनवरी को भारत अपने गणतंत्र का 76वां वर्ष हर्षोल्लास से मना रहा है. 26 जनवरी 1950 को भारत ने अपने संविधान को लागू किया था. 75 वर्षों की भारत की यह यात्रा चुनौतियों से भरी हुई, लेकिन एक सफल लोकतंत्र की कहानी है. हमारी इस सफलता में भारत के संविधान का महत्वपूर्ण योगदान है. संविधान सभा द्वारा अपना यह संविधान 26 नवंबर 1949 को राष्ट्र को समर्पित किया गया था. हमने उस समय यह संकल्प दोहराया था कि लोकतांत्रिक व्यवस्था के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक न्याय देने के प्रति हम प्रतिबद्ध हैं. हम अपनी-अपनी श्रद्धा एवं आस्थाओं का पालन करते हुए बंधुभाव के साथ राष्ट्र की एकता एवं अखंडता को अक्षुण्ण रखेंगे. हमारे संविधान की विशेषताओके संदर्भ में अफ्रीकी नेता नेल्सन मंडेला ने कहा था कि भारत का संविधान दक्षिण अफ्रीकासहित कई अन्य उभरते लोकतंत्रों के लिए प्रेरणा बना है, क्योंकि इसने विविधता में सम्मान सिखाया है. गणतंत्र दिवस के इस उत्सव के अवसर पर हम भारत के लोगों को भविष्य की चुनौतियों के प्रति सजग रहते हुए उन चुनौतियों पर विजय प्राप्त कर प्रधानमंत्री जी के विकसित भारत के संकल्प को पूर्ण करना है.

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अपने पंचत्रण के आह्वान में भारतवासियों से सभी प्रकार की गुलामी से मुक्ति का आह्वान किया है. कुछ विदेशी विद्वानोंद्वारा योजनावद्ध पद्धति से भारतीय समाज में हमारी व्यवस्थाओं, इतिहास, महापुरुषों एवं संस्कृति के प्रति हीनता का भाव उत्पन्न किया गया, इसका परिणाम हुआ कि हमारा समाज आत्महीनता के भाव से ग्रसित हुआ है. हमारे राष्ट्र का आधार क्या है, किन मूल्यों के आधार पर हम आगे बढ़ेंगे ऐसे विषयों पर संपूर्ण राष्ट्र संभ्रम में है. भारत ही दुनिया का ऐसा देश है जिसके नाम भी भारत / इंडिया दो है. यह स्थिति ही भारत के अनेक विवादों का कारण है. डॉ0 एस0 राधाकृष्णन का संविधान सभा का भाषण राष्ट्रीयता निर्भर करती है, उस जीवन पद्धति पर जिसे चिरकाल से हम बरतते चले आ रहे है. यह जीवन पद्धति तो इस देश की निजी वस्तु है. महात्मा विदुर जी ने कहा था कि संभ्रम की स्थिति में राजा, प्रजा सहित संपूर्ण राष्ट्र समाप्त हो जाता है. गणतंत्र दिवस के अवसर पर भारत के गौरव का स्मरण कर संभ्रमरहित अपने सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर समाज के जागरण का संकल्प लें.

15 अगस्त को लाल किले से अपने संबोधन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश में बदलते जनसांख्यिकीपरिवर्तन पर चिंता व्यक्त की थी 7 जनसंख्या के इस असंतुलन के कारण भारत का विभाजन हम देख चुकेहैं 7 योजनाबद्ध पद्धति से अनेको माध्यमो से भारत में धार्मिक आधार पर जनसंख्या परिवर्तन को पुन: आकार देने का कार्य हो रहा है. घटती हिंदु जनसंख्या एवं उसके परिणाम पाकिस्तान एवं बांग्लादेश में हम प्रतिदिन होने वाली घटनाओं से अनुभव कर सकते है. मिस्त्र, तुर्की, ईरान, लेबनान, कोसोवो भी बढती जनसंख्या के कारण समाप्त हुई अपनी प्राचीन संस्कृति के साक्षी है. प्रसिद्ध समाजशास्त्री अगस्टकाम्टे ने इन्हीं अनुभवों के आधार पर कहा था कि विश्व में भारत की बढ़ती शक्ति के कारण अनेक विदेशी शक्तियां, विदेश प्रेरित व्यक्ति एवंसंस्थाएँ परेशान दिखाई दे रही है. इस परेशानी के कारण वह मान्यता प्राप्त संवैधानिक संस्थाओं एवं व्यवस्थाओं को बदनाम करने का निरंतर प्रयास भी कर रहे हैं. अनेक देशों द्वारा प्रशंसित विश्व में अपना विशिष्ट महत्व रखने वाले भारतीय चुनाव आयोग एवं ईवीएम पर आरोप लगाना, सीएए का आधार लेकर भ्रम निर्माण करते हुए समाज में संघर्ष खड़ा करना, संविधान बदलने एवं आरक्षण हटाने जैसे आरोप लगाना, किसान आंदोलन के नाम पर होने वाली घटनाएं यह सब इसी के जीवंत प्रमाण है. श्रीलंका, बांग्लादेश और नेपाल में प्रारंभ हुए आंदोलनो द्वारा चुनी हुई सरकारों को बदलने में भी इन्ही शक्तियों का हाथ बताया जाता है. GENZ के नाम पर भारत में भी वह यह स्वप्न संजोए हैं. 26 नवंबर 1949 को बाबा साहेब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ने अपने संविधान सभा के अंतिम भाषण में कहा था कि यह अराजकता का व्याकरण है. उन्होंने कहा कि यह तथाकथित जनआंदोलन लोकतांत्रिक व्यवस्था के विरुद्ध प्रचार को हथियार के रूप में प्रयोग करने का प्रयास था.

विविधता में ही हमने एकता के दर्शन किए हैं

पश्चिमी एवं साम्यवादी विचारों से प्रेरणा प्राप्त अनेक विद्वान भारत को राष्ट्र नहीं अनेक राष्ट्रों के समूह के रूप में देखते हैं. उत्तर-दक्षिण, आर्य-द्रविड़ आदिवासी-शहरी, दलित हिंदू आदि के आधार पर भेदभाव को सैद्धांतिक मान्यता प्रदान करना यह उन समूहों का प्रयास रहा है. अर्बन नक्सलवादियों एवं सशस्त्र विद्रोहियों के आधार पर तथाकथित समानता लाने वाले लोग भारत के विभाजन के स्वप्न ही सदैव से देखते रहे हैं. भारत सदैव से एक राष्ट्र है, उसकी संस्कृति एक है, विविधता में ही हमने एकता के दर्शन किए हैं. आसेतु हिमाचल हम एक है. इस सत्य की अनुभूति न होने के कारण स्वार्थवश अल्पज्ञानीसत्तालोलुप राजनीतिक नेतृत्व विभाजनकारी वक्तव्य देने का कार्य कर रहा है. प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रारंभ किया गया प्रकल्प एक भारत श्रेष्ठ भारत इसी एकत्व की अनुभूति हम भारतवासियों को कराता है. काशी तमिल संगमम् इसका जीवंत उदाहरण है. हम भारत के लोगों ने करोड़ों भारतवासियों को इस सत्य की अनुभूति कराने का सफल प्रयास करना है.

पंजाबियों का 'रंगले पंजाब' की ओर बढ़ते कदम

भगवंत सिंह मान
मुख्यमंत्री पंजाब

> संविधान निर्माताओं के सपने अभी भी पूरी तरह साकार नहीं हो पाए हैं, क्योंकि हमारे देश के अधिकांश नागरिक आज भी गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी और भूख जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं. सात दशकों से अधिक के योजनाबद्ध विकास के बावजूद, हम अपने लोगों को बुनियादी सेवाएँ सुनिश्चित करने में सफल नहीं हो सके हैं, क्योंकि राज्यों और लोगों के बीच असमानताएँ लगातार बढ़ती जा रही हैं. हमारी ग्रामीण आबादी का एक बड़ा हिस्सा और यहाँ तक कि शहरी बस्तियों में रहने वाले लोग भी अब तक विकास की यात्रा का हिस्सा नहीं बन पाए हैं. पिछले चार वर्षों से हमारी सरकार संविधान निर्माताओं की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है, ताकि गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी और अन्य सामाजिक बुराइयों से मुक्त उनके सपनों का पंजाब बनाया जा सके. हम अपने महान गुरुओं, संतों और पैगंबरों के पदचिह्नों पर चलते हुए हर कीमत पर राज्य में सांप्रदायिक सौहार्द, शांति और सद्भाव बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं और पंजाब को सर्वांगीण विकास के मार्ग पर अग्रसर कर रहे हैं.

भारत आज दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक गणराज्य होने पर गर्व महसूस करता है. स्वतंत्रता के लिए लड़े गए लंबे और ऐतिहासिक संघर्ष तथा उसके बाद 26 जनवरी, 1950 को एक अद्वितीय संविधान को अपनाने के साथ देश सही अर्थों में गणराज्य बना. आज का यह दिन अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि हमारा संविधान 26 जनवरी, 1950 को महान राष्ट्रीय नेताओं और प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों के निरंतर प्रयासों के बाद लागू हुआ था.

हमारा संविधान समानता आधारित समाज में समृद्ध जीवन के महत्व को दर्शाता है और न्याय, स्वतंत्रता, समानता तथा भाईचारे के प्रमुख सिद्धांतों को स्थापित करता है. हमारे पवित्र संविधान को लागू करने वालों ने हमें संसदीय लोकतंत्र दिया, जिसका उद्देश्य सामाजिक प्रगति के साथ-साथ सभी के लिए बेहतर जीवन और समान आजीविका के अवसर प्रदान करना है. संविधान सभा ने इस तथ्य को ध्यान में रखा कि भारत सांस्कृतिक, धार्मिक, भाषाई और क्षेत्रीय विविधताओं से समृद्ध विरासत वाला देश है. ऐसे विविधतापूर्ण देश को ऐसे संविधान की आवश्यकता थी जो वास्तव में इस विविधता के प्रति गहरे सम्मान और आदर को दर्शाए. वयस्क मताधिकार का मूल सिद्धांत, जो संविधान की आधारशिला है, इसी सोच का परिणाम है. यह हम सभी के लिए गर्व का क्षण था क्योंकि हमें अपने मत का उपयोग करने की शक्ति मिली. 'लोगों की सरकार, लोगों के लिए और लोगों द्वारा' की अवधारणा ने हमारे पूर्वजों की भावनाओं और आकांक्षाओं को साकार किया.

लगभग 75 वर्षों के दौरान, हर गुजरते दिन के साथ देश में लोकतांत्रिक गणराज्य की विशेषताएं और सुदृढ़ हुई हैं, क्योंकि देशवासियों ने लोकतांत्रिक मूल्यों में अटूट विश्वास प्रकट किया और बिना किसी भय के मतदान के अधिकार के पक्ष में स्पष्ट निर्णय दिया. भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व कुछ महान व्यक्तियों ने किया, जो धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र के सच्चे समर्थक थे. महात्मा गांधी जी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, डॉ. बी. आर. अंबेडकर, शहीद-ए-आजम सरदार भगत सिंह, शहीद राजगुरु, शहीद सुखदेव, शहीद करतार सिंह सराभा सहित अनेक अन्य महान व्यक्तित्वों का इसमें अमूल्य योगदान है. यह हम सभी के लिए गर्व और संतोष की बात है कि पंजाबियों को हमारे महान सिख गुरुओं से आत्म-बलिदान और देशभक्ति की अद्वितीय भावना विरासत में मिली है, जिन्होंने हमें अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करना सिखाया.

स्वतंत्र और संप्रभु भारतीय गणराज्य का वह स्वप्न, जिसे हमारे महान पूर्वजों ने देखा था, देशवासियों और विशेष रूप से पंजाबियों द्वारा शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध संघर्ष के दौरान दी गई अपार कुर्बानियों के कारण साकार हुआ. राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में पंजाबियों द्वारा दी गई अनुपम कुर्बानियों को कोई कभी नहीं भूल सकता. आज देश हजारों गुमनाम नायकों को, विशेषकर पंजाब के वीर सपूतों को, गर्व के साथ स्मरण करता है, जिन्होंने न केवल राष्ट्रीय आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभाई, बल्कि उनके साहसिक कार्यों ने लाखों अन्य लोगों को भी 'स्वतंत्रता की जंग' में कूदने के लिए प्रेरित किया.

देश की कुल आबादी का केवल दो प्रतिशत होने के बावजूद, स्वतंत्रता संग्राम के दौरान फांसी पर चढ़ाए गए या निर्वासित किए गए शहीदों में से 80 प्रतिशत पंजाबी थे. कूका आंदोलन, ग़दर आंदोलन, किसान आंदोलन और अन्य भारतीय स्वतंत्रता आंदोलनों के साथ-साथ पंजाब ने लाला लाजपत राय और दीवान सिंह कालेपानी जैसे वीर सपूत पैदा किए, जिन्होंने देश को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के चंगुल से मुक्त कराने के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए. शहीद भगत सिंह, शहीद राजगुरु, शहीद सुखदेव, शहीद उधम सिंह और करतार सिंह सराभा के वीरतापूर्ण कार्यों ने देशवासियों को अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध झंडा उठाने के लिए प्रेरित किया और स्वतंत्रता आंदोलन में नया जोश भर दिया. इसी प्रकार, जलियांवाला बाग हत्याकांड में निर्दोष लोगों की निर्मम हत्या ब्रिटिश शासन के ताबूत में आखिरी कील साबित हुई.

महापालिकाओं में महिला नेतृत्व की कसौटी

महापौर पद के आरक्षण के लिए निकली लॉटरी के अनुसार राज्य की 29 में से 15 महापालिकाओं का नेतृत्व महिलाओं को मिलेगा. मुंबई, पुणे, नाशिक, नवी मुंबई, नागपुर, पिंपरी-चिंचवड जैसे आर्थिक व राजनीतिक महत्व के शहरों में महिला महापौर बनेंगी. यह एक स्वागत योग्य कदम है. स्थानीय निकाय में पहले 33 प्रतिशत और अब 50 प्रतिशत आरक्षण मिलने से राजनीति में महिलाओं की सक्रियता बढ़ी है.

ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामपंचायत और जिला परिषद में निर्वाचित महिलाओं ने अपने कामकाज की छाप छोड़ी है. महिला बचत गट का विस्तार, आंगनवाड़ी में सुधार, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र की सुविधा, गांव में नशामुक्ति जैसे बुनियादी और सामाजिक प्रश्नों पर महिला प्रतिनिधियों ने ध्यान दिया है. महिलाओं के संवेदनशील दृष्टिकोण की वजह से ग्रामीण समाज नीति में रचनात्मक बदलाव आया है. इसके बावजूद शहरों की राजनीति ग्रामीण की तुलना में अलग और जटिल रहती है. शहरी क्षेत्रों का बेडौल विकास हो रहा है.

मुंबई, पुणे, नागपुर व लातूर जैसे महानगरों के कई भागों में नल से नियमित जलापूर्ति नहीं होती. कचरा व्यवस्थापन को लेकर शिकायतें हैं. सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधा की कमी है. सड़कों में जानलेवा गड्ढे हैं. अंडरबिज में अंधेरा, गंदा पानी और फिसलन है. राजधानी मुंबई में अनेक मराठी शालाएं बंद होने की राह पर हैं. ठेकेदार अधूरा काम कर गायब हो जाते हैं. विभागों में तालमेल नहीं होने से बार-बार सड़कें खोदी जाती हैं. एक बड़ा खतरा यह भी है कि पेयजल वाहिनी में कहीं सीवेज का पानी न मिल जाए जैसा कि देश के सबसे स्वच्छ कहे जानेवाले इंदौर शहर में हुआ था. दोनों वाहिनी के बीच कम से कम 50 फुट का अंतर रहना चाहिए. राज्य की 29 महापालिकाओं की 2,869 सीटों में से 1,442 महिलाओं के लिए आरक्षित हैं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

निशान लगाओ लाल या भगवा मुफ्तखोरी की नहीं कोई दवा

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, देश के मशहूर अर्थशास्त्री डा. अशोक गुलाटी की सलाह है कि जो लोग देश में सरकार से मुफ्त में राशन हासिल करते हैं उनकी सार्वजनिक पहचान के लिए उनके घर को लाल रंग से पोत देना चाहिए. इस पर आपकी क्या राय है?

हमने कहा, जब मोदी सरकार देश के 80 करोड़ लोगों को अपनी मर्जी से फ्री राशन दे रही है तो अर्थशास्त्री गुलाटी को बीच में कुलाटी मारने की क्या जरूरत थी? समाज के गरीब कमजोर वर्ग के लिए ऐसी कल्याणकारी योजनाएं चलानी पड़ती हैं. दुनिया के अनेक देशों में भूखे और बेरोजगार युवा सड़कों पर बड़ी तादाद में आकर विरोध प्रदर्शन और आंदोलन करने लगते हैं. पेट भर जाए तो कोई आंदोलन नहीं करता. शांति बनी रहती है. इसलिए सरकार ने दूरदर्शिता के साथ यह योजना बनाई है. ईरान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बांग्लादेश, सोमालिया में क्या हुआ, आप जानते हैं. फ्रांस में जब 14वें लुई की हुकूमत थी तब भीषण अकाल पड़ा था. हजारों भूखे लोगों की भीड़ राजमहल के सामने आकर चिल्लाने लगी तब वहां की रानी मेरी एंतोनेत ने मंत्री से पूछा कि ये लोग शोर क्यों मचा रहे हैं? मंत्री ने जवाब दिया कि

ये लोग भूखे हैं और रोटी मांग रहे हैं. इस पर जनता की व्यथा से अनजान मूर्ख रानी ने कहा, इन लोगों से कहो कि रोटी नहीं मिलती तो केक खाएं !

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज गुलाटी ने यह नहीं सोचा कि मुफ्त राशन पाने वालों के मकानों को लाल रंग से रंगने पर कितना खर्च आएगा? मकान लाल रंगो या भगवा इससे मुफ्त राशन पानेवाले 4 मंजिला मकान के मालिक भी नहीं शरमाएंगे. कहते हैं कि बेशर्म की पीठ पर झाड़ ऊग आया. उसने शरमाने की बजाय कहा कि अच्छा हुआ इससे हवा मिलती रहेगी. मुफ्तखोरी की आदत को नेताओं ने बढ़ावा दिया है. इसके पीछे वोट बैंक बढ़ाने की राजनीति है. महाराष्ट्र में तो पुरुषों ने भी लाड़की बहीण योजना का लाभ उठाया. सरकारी नौकरीवाली महिलाओं ने भी इसका फायदा लिया.

हमने कहा, महाराष्ट्र की नहीं, राष्ट्र की बात कीजिए. गुलाटी ने कहा कि टैक्स देनेवालों के पैसे से लोगों को मुफ्त अनाज देकर आलसी बनाया जा रहा है. यह राशन उन्हीं लोगों को दिया जाना चाहिए जिन्हें इसकी वास्तव में जरूरत है. जब मकान पर लाल रंग लगाया जाएगा तो वे लोग मुफ्त राशन लेना छोड़ देंगे जो सामर्थ्यवान हैं.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, जिसे मुफ्त का चंदन घिसने की आदत पड़ गई है, वह अपनी आदत से बाज नहीं आएगा. लोकतंत्र के लिए चुनाव चाहिए और चुनाव के लिए वोट ! वोट के लिए मुफ्त की रेवड़ी बांटनी पड़ती है.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12152 - डॉ. सागर खादीवाला

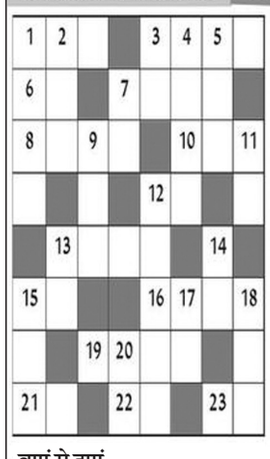

ऊपर से नीचे
1. मनोरंजक (उर्दू) 2. मृतक का शोक (उर्दू) 3. कथन, वचन, वार्तालाप 4. झोंका खिलाना, लपकाना, आगे बढ़ाना, आग दहकाना 5. गिरना, अधोगति, अवनति 7. फूलों का हार, लड़ी 9. बबूल नामक वृक्ष 11. मानचित्र, भवन आदि का रेखा चित्र (उर्दू) 12. वेदव्यास का एक नाम (सं.) 13. शताब्दी, सैकड़ा (उर्दू) 14. तलवार (सं.) 15. आकृति, स्वरूप, डीलडौल 17. बहुत छोटा टुकड़ा, रवा 18. ऊंट-बैल आदि के नाम में बंधी हुई रस्सी 20. परिमाण, मिकदार, बारहखड़ी लिखते समय वह स्वर-चिन्ह या रेखा जो शब्दों के ऊपर या आगे पीछे लगाई जाती है

बाएं से दाएं
1. सिर के अंदर का गूदा या भेजा, समझ, बुद्धि (उर्दू) 3. लड़कपन, बचपन 6. बुरी आदत (उर्दू) 7. अधीनस्थ कर्मचारी (उर्दू) 8. चमकने वाला, चमकदार 10. जंगल, घर (सं.) 12. पहनावा, वस्त्र, वेशविन्यास 13. सीमा (उर्दू) 15. अभ्यस्त, जिसे किसी चीज की लत लग गई हो (उर्दू) 16. राक्षसी 19. वह ग्रंथ जिसमें राम के चरित्रों का वर्णन हो (सं.) 21. डोरी, सूत आदि को बटकर बनाई हुई रस्सी 22. रक्षा, बचाव (सं.) 23. लंबा तथा नुकीला कांटा (सं.)

Solution 12151

आ	य	ट	न		नि	शा	ना
ल		क	म	ला		इ	ति
सी	ख		न	ख	लि	स्ता	न
	दा	म		ना	प		
अ	न	हि	त		ट	ख	ना
मा			नि		ना		ड़ी
न		ता	क	त		मौ	
त	ब	ला		क	बू	त	र

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में आर्थिक सहयोग मिलेगा, शिक्षा के क्षेत्र में यात्रा होगी, वर्ष के मध्य में सामाजिक कार्यों में मन खिन्न रहेगा, व्यापार में व्यर्थ की भागदौड़ एवं व्यय में वृद्धि होगी,मित्र के कारण तनाव रहेगा, वर्ष के अन्त में प्रतिष्ठा एवं यश में वृद्धि होगी, घरेलू कार्यों में व्यस्तता रहेगी, व्यय में नियंत्रण रखें.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक तनाव रह सकता है, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को कर्मचारियों के सहयोग से कार्यों में सफलता मिलेगी, चिन्ता का निवारण होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को आर्थिक कमी का अनुभव होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को पूर्व निर्धारित कार्यों में सफलता मिलेगी.

धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को नौकरी में सफलता, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को शिक्षा अच्छी रहेगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को धार्मिक यात्रा के योग हैं.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक मिलनसार, संतोषी, एकांतप्रिय महत्वाकांक्षी स्वाभाव का होगा. इनकी शिक्षा अच्छी होगी. नौकरी में अच्छी सफलता प्राप्त होगी. माता पिता के प्रति आस्थावान और स्नेही रहेगा.

मेष- बिना मांगे दूसरों को सलाह देना भारी पड़ सकती है. आय व्यय का संतुलन बनाकर चलें. छोटी मोटी बातों पर उत्तेजित होकर अपना काम न बिगाड़े.

वृषभ- वाहन खरीदने का मन बनेगा. गलतफहमी से रिश्तों में दरार आयेगी. अपनों का भरपूर सहयोग मिलेगा. जारी प्रयास सफल और सार्थक होगा.

मिथुन- कार्यक्षेत्र में अधिकार और बर्चस्व बढ़ेगा. सहयोगी उपलब्धियों से ईर्ष्या करेंगे. पारिवारिक सुख संबंधों में निकटता आयेगी.पुरस्कार का योग है.

कर्क- प्रभावशाली लोगों के संपर्कों का लाभ होगा. व्यापारिक साझेदारी लाभकारी रहेगी. आपको थोड़ी परेशानियों का अनुभव होगा लेकिन प्रयास सफल होंगे.

सिंह- सामाजिक कार्यक्रमों में बढ़चढ़कर हिस्सा लेंगे. मेहनत के शानदार परिणाम मिलेंगे. धन व्यय होगा. व्यवसायिक समस्याओं का सरलता से समाधान होगा.

कन्या- मन की बात अपनों से कह दें, संबंधों में मधुरता आयेगी.यात्रा का योग है. विरोधी वर्ग सक्रिय रहेगा. आर्थिक क्षेत्र में किया गया प्रयास सफल होगा.

तुला- खानपान में सावधानी रखें. कारोबारी साझेदारी लाभदायक रहेगी. धर्म में आस्था बढ़ेगी. विवाद को न बढ़ायें. आश्वासनों को पूर्ण नहीं कर पायेंगे.

वृश्चिक- विरोधियों को मात देने में सफल रहेंगे. प्रियजन से मुलाकात सुखद रहेगी. आर्थिक क्षेत्र में चल रहा प्रयास सफल होगा. मनोरंजन आदि के योग है.

धनु- अधिकारियों से बातचीत में नरमी बरतें. अचानक नई बात सामने आ सकती है. परिणाम सुखद एवं लाभदायक अनुकूल रहेंगे. शुभचिन्तकों की मदद मिलेगी.

मकर- अधिकारियों से तालमेल बना रहेगा. अनावश्यक खर्च से परेशानी होगी. आजीविका के क्षेत्र में प्रगति होगी. परिवर्तन के प्रयास सार्थक होंगे.

कुम्भ- कानूनी मामले में अनदेखी करके परेशानी बढ़ा लेंगे. कार्य योजना में बदलाव से लाभ होगा. आर्थिक योजना को बल मिलेगा. पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी.

मीन- लंबित योजनायें फिर से शुरू हो सकती हैं. कार्यस्थल पर विवाद से तनाव बढ़ेगा. कोइ ऐसा कार्य बनेगा, जिससे आपको आत्म संतोष प्राप्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

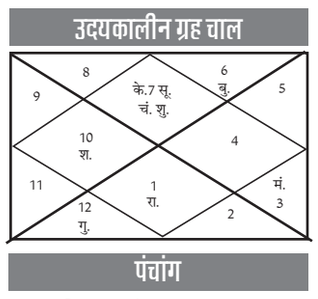

पंचांग

रा.मि. 06 संवत् 2082 माघ शुक्ल अष्टमीं चन्द्रवासरे शाम 6/37, अश्विनी नक्षत्रे दिन 10/26, साध्य योगे प्रात: 7/34 तदुपरि शुभ योगे रातअंत 4/33, विष्टि करणे सू.उ. 6/37, सू.अ. 5/23, चन्द्रचार मेष, पर्व- भीष्माष्टमीं, शु.रा. 1,3,4,6 7,8,11 अ.रा. 2,5,6,9, 10,12 शुभांक- 3,5,9.

व्यापार भविष्य

माघ शुक्ल अष्टमीं को अश्विनी नक्षत्र के प्रभाव से गुड़ खांड, के भाव में उठाल आयेगा. लाल रंग की वस्तुओं में तेजी होगी. रूई, चांवल सरसों, लाख गेहूँ, चना, के भाव में वृद्धि होगी. आज बाजार का रूख देखकर कार्य करें. भाग्यांक 6068 है.

SUDOKU 7284

3				8				9
		8	6		9	5		
6	5			4			7	1
	4						2	
1	2			6			9	8
		6	4		5	8		
9				1				7

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7283

8	2	4	3	9	7	5	1	6
3	5	6	1	4	2	7	8	9
1	9	7	6	5	8	2	3	4
9	6	2	5	8	3	1	4	7
5	3	1	4	7	9	8	6	2
4	7	8	2	1	6	9	5	3
2	8	3	9	6	1	4	7	5
6	1	5	7	2	4	3	9	8
7	4	9	8	3	5	6	2	1